P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भीष्म साहनी के लेखन में 'माधवी'

मंजुला शर्मा
सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
टी. डी. बी. कॉलेज, रानीगंज,
पश्चिमी बंगाल, भारत

सारांश

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में स्त्री–पुरूष की असमानता विद्यमान है। सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक बदलाव, प्रजातान्त्रिक मूल्यों और व्यक्ति के मानवाधिकारों की लगातार बढ़ती जनचेतना शिक्षा और प्रसार के तकनीकी दौर में भी 'नारी प्रश्न' जीवित है। सामन्ती परिवार सत्ता से प्रजातान्त्रिक राजसत्ता (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैधानिक) तक में आज भी स्त्री की स्थिति, सम्मान और अधिकार क्या है? स्त्री के व्यक्ति, व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास में पुरूष (पिता, पति, पुत्र) अक्सर खलनायक की भूमिका में ही क्यों दिखाई देते हैं? स्त्री की न अपनी कोई स्वतन्त्र पहचान और न कोई स्वतन्त्र निर्णय। भारतीय साहित्य ने स्त्री–विमर्श के चित्र विभिन्न आयामों के साथ पेश किये हैं।

'माधवी' दानी राजा ययाति की कन्या है। वह पितृसत्तात्मक समाज में पुरूष की सम्पत्ति है। जहाँ पिता अपने दानी होने के अहंकार को जीवित रखने के लिए पुत्री का दान करता है। गालव अपनी गुरूदक्षिणा जुटाने के उपक्रम में उसका प्रयोग करता है और अश्वमेघी घोड़े के बदले राजा उसे अपने रानिवास में रहने की जगह देते हैं यही नहीं गालव के गुरू वृद्ध विश्वामित्र भी माधवी के देह के कामसुख को लूटकर कृतकृत्य होते हैं। इन सबके बीच माधवी, गालव से प्रेम कर बैठती है क्यो? भीष्म–साहनी का स्त्री विमर्श इसकी व्याख्या करता है।

मुख्य शब्दः साहित्य, नारी–प्रश्न, पितृसत्तात्मक समाज, मानवाधिकार, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

प्रगतिशील साहित्यकार भीष्म साहनी का लेखन भारतीय जनजीवन के विविध पहलुओं एवं मानवीय संवेदनाओं का चित्रण प्रस्तुत करता है। स्त्री–पुरूष की विषमता प्राचीन काल से ही अपने ठोस रूप में हमारे समाज में जीवित हैं। महाभारत की कथा से प्रेरित भीष्म साहनी द्वारा रचित 'माधवी' नाटक का केन्द्र राजा ययाति की कन्या 'माधवी' है। माधवी पुरूष सत्तात्मक समाज के कई प्रश्नों को विस्तृत करती है। 'माधवी' नाटक के रचना/प्रक्रिया के सन्दर्भ में लेखक लिखते हैं ''मैंने कथानक के नाते तो 'महाभारत' में वर्णित कथा के ही प्रसंग रखे परन्तु नाटक के केन्द्र में माधवी आ गई। यह उसी की कहानी है, पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की अवहेलना और शोषण की कहानी ।[1]''

चहकती हुई माधवी के समझने से पहले उसका दान किया जाता है क्योंकि ''सुनो गालव, मैं तुम्हें आठ सौ अश्वमेघी घोड़े तो नहीं दे सकता, पर मैं अपनी एकमात्र कन्या तुम्हें सौंप सकता हूँ। वह बड़ी गुणवती युवती है। उसे पाकार कोई भी राजा तुम्हें आठ सौ अश्वमेघी घोड़े दे देगा।''2 गिरीश रस्तोगी विश्लेषण करते हैं ''प्रथम दृश्य में ही सारा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक ढाँचा, सम्बन्धहीनता, संवेदनशून्यता, पाखण्ड, पुरूष का आत्ममोह, अधिकार–वृत्ति और समाज में –पितृसत्तात्मक सामन्ती समाज में नारी शोषण सबकुछ संकेतित हो जाता है, स्त्री का अनिश्चय के गर्त में झोंक दिया जाना स्थापित होता है साथ ही दो विरोधी स्वर एक–साथ उभरते हैं– एक; माधवी पटरानी बनने जा रही है, दूसरा, भगवान ही उसकी रक्षा करें क्योंकि मनुष्य जगत ने तो उसकी व्यवस्था कर दी।3''

स्वयं को दान दिये जाने के सन्दर्भ में माधवी का पिता के साथ वार्तालाप होता हैः–

''माधवीः आज माँ होतीं तो क्या वह भी मुझे इस तरह दान में दे देतीं!
ययातिः इस समय मेरा धर्म ही सर्वोपरि है, माधवी।''4

गालव के साथ माधवी अश्वमेघी घोड़ों की तलाश में निकल पड़ती है क्योंकि गालव की प्रतिज्ञा अब उसकी प्रतिज्ञा बन चुकी है। माधवी की

आन्तरिकता स्पष्ट होती है ''वनों, पर्वतों को तुम्हारे संग लाँघते हुए मुझे अच्छा लगेगा।[5]''

माधवी एक के बाद एक तीन राजाओं के साथ बिना प्रेम के कामरत होती है तथा उन्हें चक्रवर्ती पुत्र प्रदान करती है। राजा हर्यश्च राज–ज्योतिषी द्वारा उसके लक्षणों की परीक्षा करवाते हैं जो परीक्षा न होकर उसके अंग–प्रत्यंग का रसिक वर्णन होता है। माधवी मोल–तोल विधि के इस प्रक्रिया पर प्रश्न करती है परन्तु कोई इस पर ध्यान नहीं देता। गिरीश रस्तोगी के अनुसार ''पहली बार यहाँ इस बाजारू संस्कृति में माधवी का आक्रोश व्यक्त होता है। पर किसी का ध्यान उसकी आक्रोशात्मक वृत्ति पर नहीं है, गालव का भी नहीं सब अपने–अपने मोल–तोल सौदे में व्यस्त और आशंकित है।''[6]

तत्पश्चात् पुत्र के लिए लालायित काशी के कामुक राजा दिवोदास, और भोजनगर के वृद्ध राजा उशीनर के रानिवास में रहकर माधवी गालव के लिए छः सौ अश्वमेघी घोड़े जुटाती है एवं शेष घोड़ों के लिए वह विश्वामित्र के पास पहुँचती है। कुछ इस प्रकार–

माधवीः सभी राजा मेरे साथ प्रसन्न थे।

विश्वामित्रः गालव से प्रेम करते हुए तुम–मेरे साथ रहना चाहती हो?

माधवीः हाँ, महाराज! गालव से प्रेम करते हुए ही मैं तीन राजाओं के साथ रह चुकी हूँ।''[7]

माधवी के प्रेम को भूपेन्द्र कलसी इन शब्दों में व्यक्त करते हैं 'वह गालव है, महाराज! प्रेम की जिस आँच में तपकर वह निकली है, क्या उससे कठिन परीक्षा भी कुछ हो सकती है? गुरू ने शिष्य के दम्भ को तोड़ना चाहा था, पर उनके सामने जो कसौटी थी,उसने उनके गुरूत्व को छोटा कर दिया। साधना व्यक्ति को निर्मल बनाती है, उसके अन्तर को उदार और विनीत। क्या गुरू अपने दम्भ को जीत पाए थे?[8] माधवी के प्रेम के सन्दर्भ में रोहिणी अग्रवाल का वक्तव्य है निसन्देह विभक्त होकर भी समग्र एवं अक्षुण्ण बने रहने की जटिल साधना अथाह आत्मबल से ही संचित कर पाता है व्यक्ति।''[9] भीष्म साहनी माधवी के प्रेम के संकल्प को दिखा चुके हैं

''जहाँ तुम्हारी यात्रा समाप्त होगी, वहाँ से मेरी यात्रा आरम्भ होगी, गालव।[10]'' भविष्य की मुक्ति और गालव से प्रेम की आकांक्षा में माधवी बार–बार निचोड़ी जाती है। गिरीश रस्तोगी के अनुसार ''माधवी'' में सारी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैयक्तिक व्यवस्था के बीच, सम्पूर्ण अनुष्ठान के साथ माधवी नारी देह की, रूप और सौन्दर्य की उस विडम्बना और यातना को सहती चली जाती है और पुत्र–लाभ कराती, बच्चों से अलग होती, टूटती– बिखरती चली जाती है क्योंकि उसे विश्वास है कि अन्त में गालव उसे मिलेगा।[11]'' गालव के लिए माधवी गुरू दक्षिणा चुकाने एवं चक्रवर्ती राजा बन जाने तक का साधन है भवदेव पाण्डेय के अनुसार पूरे नाटक में 'माधवी' का युवा नारीत्व और चिर कुँवारापन अयोध्या के राजा हर्यश्च, काशी के दिवोदास, गाँधार के उशीनर द्वारा तो निचोड़ा जाता ही है, इसके अलावा गालव के विद्यागुरू विश्वामित्र भी 'माधवी' की देह का काम–सुख लूटकर कृतकृत्य होते हैं। 'माधवी' द्वारा यह कहा जाना, मैं क्या चाहूँगी? मेरे चाहने से क्या होता है, गालव? मैं तो तुम्हारी गुरू–दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ।[12]''

माधवी प्रसव वेदना को कुछ इस प्रकार स्वीकार करती है ''मैंने मन में कहा, यदि गालव से मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ होता तो क्या मैं इतना रोती–चिल्लाती? तब तो मैं सारी पीड़ा हँसते–हँसते सहन कर लेती। और गालव.....।[13]'' माधवी' के अपने नवजात शिशुओं को छोड़ जाने में उसके स्त्रीत्व की पीड़ा निहित है ''जो माँ अपने बच्चे को छाती से लगा पाये, वही स्वतन्त्र होती है।[14]'' गालव और ययाति कर्तव्यपरायण हैं किन्तु जिस नारी के माध्यम से दोनों के कर्तव्य पूरे होते हैं वह दुर्बल ठहरायी जाती है। भीष्म साहनी विश्लेषण करते हैंः–

यदि यह दुर्बल नारी बीच में से निकल जाये, गालव, तो क्या होगा?[15] माधवी का आक्रोश स्पष्ट होता है 'उस दुर्बल नारी का यों भी कोई अस्तित्व नहीं है, न उस लम्पट राजा के लिए, न अयोध्या नगरी के लिए, न मेरे पिता के लिए और शायद तुम्हारे लिए भी नहीं, गालव। माधवी न घर की न घाट की।'' [16]

नाटक में यह दुर्बल नारी खिलखिला उठती है ''मैं इतने चक्रवर्ती राजाओं को जन्म दे रही हूँ वे एक दूसरे से ही लड़कर कट मरेंगे।''[17] पिता ययाति अपने दानवीरता की डंका पीटना चाहते हैं–क्या अभी भी दानी राजा कर्ण से मेरी तुलना की जाती है या राजा कर्ण को लोग भूल गये हैं?''[18] स्वयंवर में तीनों राजा माधवी को लुभाने के लिए उसके बच्चे को सामने रखते हैं। गालव माधवी से अनुष्ठान करने को कहता है। वह उसके ढले हुए देह को स्वीकार करना नहीं चाहता। उसके विश्वामित्र के आश्रम में रहने के लिए प्रश्न करता है माधवी और गालव का संवादः

गालवः पर जो स्त्री मेरे गुरू के आश्रम में रह चुकी हो, उसे मैं अपनी पत्नी कैसे मान सकता हूँ?

माधवीः ओ गालव, गालव, तुम सीधी बात क्यों नहीं करते? दिल में तुम्हारे वासनायें कुलबुलाने लगी है, ऊपर से तुम आदर्शों और मर्यादाओं की बात करते हो।''

तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरू–दक्षिणा जुटायी है।''[19] अंशुल त्रिपाठी के अनुसार ''जिस गालव के लिए माधवी बार–बार माँ बनी– अयोध्या, काशी और भोजनगर का राजसुख छोड़ा– उसकी गुरू–दक्षिणा के लिए बार–बार अपने मातृत्व की हत्या कर चिरकुमारी होने के लिए अनुष्ठान किया, वही गालव स्वयंवर के आयोजन से पहले माधवी से विमुख हो गया। वह उसे एक ढल चुकी देह लगने लगी–अधेड़ उम्र की एक अनाकर्षक महिला, जिसके पास उदासी के सिवा और कुछ भी नहीं।''[20]

माधवी गालव के समक्ष स्पष्ट करती है ''तुम भी गुरूजनों जैसे ही निकले, गालव.....।

तुम सचमुच एक दिन ऋषि गालव बनोगे।''[21]

गिरीश रस्तोगी के शब्दों में ''किसी भी पुरूष को वह परीक्षार्थी नहीं बनने देती। क्यों ये सारे ढोंगी पुरूष–पिता ययाति, सारे विलासी राजा, विश्वामित्र–उसकी परीक्षा करेंगे? गालव को वह पहले ही समझ चुकी थी लेकिन फिर एक बार वह अपने रूपहीन शरीर के साथ

उसे आजमाती है क्योंकि वह उससे प्रेम करती है और उसके साथ स्वतंत्र होना चाहती है''[22]

अपने अन्तिम वाक्य ''मैंने अपनी भूमिका निभा दी.....के साथ माधवी गालव को स्वतंत्र कर जाती है।

माधवी के सन्दर्भ में भवदेव पाण्डेय लिखते हैं ''माधवी' स्त्री जागरण के प्रत्यमिज्ञ सूत्रधार के रूप में लिखा गया नाटक है। आज के स्त्री–विमर्श युग में माधवी ने गालवों, ययातियों और विश्वामित्रों के चेहरों के मुखौटे हटा दिये हैं।''[23] भूपेन्द्र कलसी 'माधवी' की सृजनात्मकता पर विचार व्यक्त करते हैं।''भीष्म साहनी का सृजन' मानवीय संवेदनाओं के औदात्य और उनकी शक्ति को निर्मित करनेवाले आम आदमी के संघर्ष का सृजन है। उनके अन्य नाटकों की तरह यह नाटक भी कलात्मक सृजनशीलता का पर्याय है।''[24]

भीष्म साहनी रचित 'माधवी' नाटक स्त्री और आधुनिकता पर पुनर्विचार एवं बहुत कुछ कहने की शक्ति के कारण हिन्दी नाटक और रंगमंच को आगे ले जाने में समर्थ है।

निष्कर्ष

'माधवी' नाटक का केन्द्र ययाति कन्या माधवी है। लेखक ने इस नाटक में पुरूष की सत्तात्मक प्रवृत्ति का विश्लेषण किया है। राजा ययाति, कर्ण और सत्य हरिश्चन्द्र की तरह दानवीर बनना चाहते हैं और मुनिकुमार गालव माधवी के माध्यम से गुरू–दक्षिणा का ऋण चुकाना चाहते हैं। माधवी गालव से प्रेम करती है और तीन राजाओं के साथ बिना प्रेम के कामरत होकर उन्हें चक्रवर्ती पुत्र और गालव को अश्वमेघी घोड़े जुटाती है। वह शेष घोड़ों के लिए विश्वामित्र की भोग्या भी बनती है। परन्तु माधवी की अपनी इच्छा का क्या? वह तो निमित्त मात्र है। स्वयंवर से पहले गालव माधवी से मिलता है तथा उससे गुरू के आश्रम में रह चुकने एवं चिर–कौमार्य पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। माधवी गालव से अपने वास्तविक स्वरूप में जुड़ना चाहती है और वह गालव को स्वतंत्र करती है। गालव की स्वतंत्रता में ही माधवी अपने प्रेम की परिपूर्णता समझती है। भीष्म साहनी के इस नाटक में स्त्री जीवन की गहराई अपने सम्पूर्ण परिवेश के साथ अभिव्यंजित ही नहीं होती बल्कि माधवी की पीड़ा स्त्री त्रासदी की प्रासंगिकता को उभारने में सक्षम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *'साहनी भीष्म आज के अतीत' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0 239*
2. *साहनी भीष्म 'माधवी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1984, पृ0 17*
3. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह आलोचना त्रैमासिक, अंक 17–18 वर्ष 2004, पृ0 187*
4. *साहनी भीष्म 'माधवी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ0 19*
5. *साहनी भीष्म 'माधवी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ0 28*
6. *रस्तोगी गिरीश, सं नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17–18, वर्ष 2004, पृ0 187*
7. *साहनी भीष्म, 'माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 80,81*
8. *कलसी भूपेन्द्र, सं0 नामवर सिंह, आलेचना त्रैमासिक अंक 17,18 वर्ष 2004, पृ0 210*
9. *अग्रवाल रोहिणी, सं0 नामवर सिह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17,18 वर्ष 2004, पृ0 223*
10. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ0 26*
11. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक 17, 18 वर्ष 2004, पृ0 191*
12. *पाण्डेय भवदेव, सं0 नामवर सिंह, आलोचना, त्रैमासिक, अंक 17, 18, वर्ष 2004, पृ0 199*
13. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ0 57, 58*
14. *वही पृ0 54*
15. *वही पृ0 55*
16. *वही पृ0–55*
17. *17 वही पृ0 56*
18. *18 वही पृ0 42*
19. *वही पृ0 93*
20. *त्रिपाठी अंशुल सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक पृ0 17,18 वर्ष 2004, पृ0 196*
21. *साहनी भीष्म, माधवी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ0 94*
22. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक 17, 18 वर्ष 2004, पृ0 191*
23. *पाण्डेय भवदेय सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक0 17, 18 वर्ष 2004, पृ0 202*
24. *कलसी भूपेन्द्र सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17, 18, वर्ष 2004, पृ0 210*